

विचार बिन्दु

अगर इंसान सुख-दुःख की चिंताओं से ऊपर उठ जाये तो आसमान की ऊँचाई भी उसके पैरों तले आ जाये। —शेख सादी

युवाओं में फैलता शराब के नशे का मकड़जाल

नशाखोरी इस सदी की सबसे बड़ी समस्या है जिसमें शराब का नशा प्रमुख है। आज युवा वर्ग शराब के नशे में खोता जा रहा है। शराब जैसे तन मन और परिवार को खोखला करने वाली की लत उन्हें बनाकर रही है। शुरू में युवा शौक के तौर पर शराब का सेवन करता है और बाद में नशे की मांग पूरी करने के लिए तस्करी और गैर सामाजिक कार्य के कारोबार में फंस जाता है।

आजकल के बदलते लाइफस्टाइल में हमारे देश में नशा एक ऐसा अभिशाप बन कर उभर रहा है जो हमारे युवाओं को तेजी से अपनी गिरफ्त में लेता जा रहा है। साल-दर-साल इन युवाओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है। युवाओं में शराब जैसे खतरनाक नशे के बढ़ते चलन के पीछे बदलती जीवनशैली, अकेलापन, बेरोजगारी और आपसी कलह जैसे अनेक कारण हो सकते हैं।

युवाओं में तेजी से बढ़ रही शराब की लत को लेकर स्वास्थ्य विशेषज्ञ समय-समय सचेत करते रहते हैं। शराब का सेवन शरीर को गंभीर क्षति पहुंचा सकता है। युवाओं के बीच शराब का सेवन एक चलन सा चल पड़ा है। शराब एक नशीला पदार्थ है, जिसको एक प्रकार का अवसाद भी माना जाता है।

शोध पत्रिका 'लॉसेट' में प्रकाशित एक वैश्विक अध्ययन में यह खुलासा किया गया है कि युवाओं को ज्यादा उम्र वालों की तुलना में शराब के सेवन से अधिक स्वास्थ्य जोखिम का सामना करना पड़ता है। भौगोलिक क्षेत्र, आयु, लिंग और वर्ष के आधार पर शराब से जुड़े जोखिम के बारे में यह पहला अध्ययन है जिसमें कहा गया है कि दुनिया भर में शराब की खपत की सिफारिशें उम्र और स्थान पर आधारित होनी चाहिए। इसमें सबसे सख्त दिशा-निर्देश 15-39 साल के आयु वर्ग के लिए लक्षित हैं। शोधकर्ताओं ने 204 देशों में शराब के सेवन के अनुमानों के आधार पर गणना की है कि 2020 में 1.34 अरब लोगों ने हानिकारक मात्रा में इसका सेवन किया। अध्ययन में पाया गया कि 15 से 39 साल की उम्र के लोगों को शराब पीने पर ज्यादा खतरा होता है। 2020 में बहुत ज्यादा मात्रा में अल्कोहल लेने वालों में 59.1 प्रतिशत लोग 15 से 39 साल की उम्र वाले थे। इनमें से 76.7 प्रतिशत पुरुष थे।

हमारे समाज में नशे को सदा बुराइयों का प्रतीक माना और स्वीकार किया गया है। इनमें सर्वाधिक प्रचलन शराब का है। शराब सभी प्रकार की बुराइयों की जड़ है। शराब के सेवन से

आजादी के बाद देश में शराब की खपत 60 से 80 गुना अधिक बढ़ी है। यह भी सच है कि शराब की बिक्री से सरकार को एक बड़े राजस्व की प्राप्ति होती है। मगर इस प्रकार की आय से हमारा सामाजिक ढांचा क्षत-विक्षत हो रहा है और परिवार के परिवार खत्म होते जा रहे हैं।

मानव के विवेक के साथ सोचने समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है। वह अपने हित-अहित और भले-बुरे का अन्तर नहीं समझ पाता। शराब के सेवन से मनुष्य के शरीर और बुद्धि के साथ-साथ आत्मा का भी नाश हो जाता है। शराबी अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है। अमीर से गरीब और बच्चे से बुजुर्ग तक इस लत के शिकार हो रहे हैं।

एक सरकारी सर्वेक्षण के अनुसार भारत में पांच में से एक शख्स शराब पीता है। सर्वे के अनुसार 19 प्रतिशत लोगों को शराब की लत है। जबकि 2.9 करोड़ लोगों की तुलना में 10-75 उम्र के 2.7 प्रतिशत लोगों को हर रोज ज्यादा नहीं तो कम से कम एक पेग जरूर चाहिए होता है और ये शराब के लती होते हैं। सर्वेक्षण के अनुसार देशभर में 10 से 75 साल की आयु वर्ग के 14.6 प्रतिशत यानी करीब 16 करोड़ लोग शराब पीते हैं।

छत्तीसगढ़, त्रिपुरा, पंजाब, अरुणाचल प्रदेश और गोवा में शराब का सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है।

इस सर्वे की चौकाने वाली बात यह है कि देश में 10 साल के बच्चे भी नशीले पदार्थों का सेवन करने वालों में शामिल हैं। सर्वेक्षण में यह भी पता चला है कि शराब पर निर्भर लोगों में से 38 में से एक ने किसी न किसी बीमारी की सूचना दी, जबकि 180 में से एक ने रोगी के तौर पर या अस्पताल में भर्ती होने की जानकारी दी।

एक अन्य सर्वे के मुताबिक भारत में गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लगभग 37 प्रतिशत लोग नशे का सेवन करते हैं। इनमें ऐसे लोग भी शामिल हैं जिनके घरों में दो जून रोटी भी सुलभ नहीं है।

जिन परिवारों के पास रोटी-कपड़ा और मकान की सुविधा उपलब्ध नहीं है तथा सुबह-शाम के खाने के लाले पड़े हुए हैं उनके मुखिया मजदूरी के रूप में जो कमा कर लाते हैं वे शराब पर फूंक डालते हैं। इन लोगों को अपने परिवार की चिन्ता नहीं है कि उनके पेट खाली हैं और बच्चे भूख से तड़फ रहे हैं। ऐसे लोगों की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही है। ये लोग कहते हैं वे गम को भूलाने के लिए नशे का सेवन करते हैं। उनका यह तर्क किंतना बेमानी है जब यह देखा जाता है कि उनका परिवार भूख ही सो रहा है। युवाओं में नशा करने की बढ़ती प्रवृत्ति के चलते शहरी और ग्रामीण अंचल में अपराधिक वारदातों में काफी इजाफा हो रहा है। शराब के साथ नशे की दवाओं का उपयोग कर युवा वर्ग आपराधिक वारदातों को सहजता के साथ अंजाम देने लगे हैं। हिंसा, बलात्कार, चोरी, आत्महत्या आदि अनेक अपराधों के पीछे नशा एक बहुत बड़ी वजह है। शराब पीकर गाड़ी चलाते हुए एक्सीडेंट करना, शादीशुदा व्यक्तियों द्वारा नशे में अपनी पत्नी से मारपीट करना आम बात है।

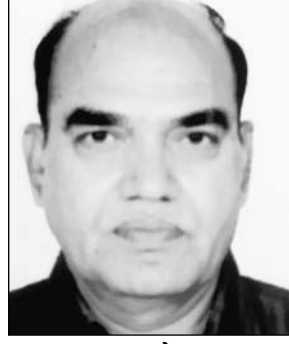
आजादी के बाद देश में शराब की खपत 60 से 80 गुना अधिक बढ़ी है। यह भी सच है कि शराब की बिक्री से सरकार को एक बड़े राजस्व की प्राप्ति होती है। मगर इस प्रकार की आय से हमारा सामाजिक ढांचा क्षत-विक्षत हो रहा है और परिवार के परिवार खत्म होते जा रहे हैं। हम विनाश की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। देश में शराब के लिए कई बार आंदोलन हुआ, मगर सामाजिक, राजनीतिक चेतना के अभाव में इसे सफलता नहीं मिली। सरकार को राजस्व प्राप्ति का यह मोह त्यागना होगा तभी समाज और देश मजबूत होगा और हम इस आसुरी प्रवृत्ति के सेवन से दूर होंगे।

—बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक और पत्रकार

अभेद्य दीवारों से रक्षित चूरू का किला

चूरू किले का निर्माण चूरू के ठाकुर कुशलसिंह ने सन् 1694 में करवाया। उन्होंने नगरवासियों को सुरक्षा प्रदान करने एवं आत्मरक्षा के उद्देश्य से इस किले का निर्माण कराया। किले का निर्माण होते ही लोगों का कुशलसिंह में विश्वास बढ़ा और बड़ी संख्या में लोग आकर चूरू में बसने लगे। कहा जाता है कि किला बन जाने से नगर के विकास एवं व्यापार का मार्ग प्रशस्त हुआ और चूरू तरक्की करने लगा।

चूरू के मुख्य बाजार में स्थित इस किले का परकोटा बहुत मजबूत बना है। यह किला नौ बुजों में विभक्त है। किले का सिंहद्वार पश्चिमामुख है। किले की



पन्नालाल मेघवाल

के एक बुज में सन् 1870 ईस्वी का एक पट्ट लगा है। किले के एक भाग में मेहता मेघराज की देवली, एक पुराना कुआँ और गोपीनाथ जी का भव्य मंदिर है।

चूरू के किले में ठाकुर शिवसिंह द्वारा बनाया गया भव्य गोपीनाथ का मंदिर है। इस मंदिर में राधा-कृष्ण के साथ-साथ शिव-पार्वती गणेश-कार्तिकेय, हनुमानजी एवं दुर्गा की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। किले में भगवानदास बावला ने सन् 1895 में एक अस्पताल बनवाया था। किले के दक्षिणी-पूर्वी भाग में ठाकुरों के महल और कचहरी थी। चूरू का तहसील

मुख्यालय भी वर्षों तक यहां रहा। नगरपालिका का कार्यालय भी अनेक वर्षों तक यहीं से संचालित हुआ। यहां पर एक बालिका विद्यालय संचालित है। बालिका स्कूल के पास ही जेल और प्रहरियों के क्वार्टर बने थे उन्हें अन्यत्र स्थानांतरित किया गया है। किले के दक्षिण में बने एक भवन में वर्षों स्वास्थ्य विभाग का दफ्तर रहा। बाद में दूरदर्शन रिले केंद्र भी स्थापित हुआ। इस भवन में मातृ शिशु कल्याण केंद्र संचालित रहा। किले के पुराने कुएँ से किले और आस-पास के लोगों की जलापूर्ति की जाती है।

इतिहासकार गोविंद अग्रवाल द्वारा लिखित चूरू मंडल का शोधपूर्ण इतिहास के अनुसार यह किला अनेक लड़ाइयों का साक्षी रहा है। इस किले को तोप के गोले भी नहीं भेद पाए।

ठाकुर कुशलसिंह के वंशज ठाकुर शिवसिंह शूरवीर और स्वामिनी थो बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह से उनकी कभी नहीं बनी। महाराजा सूरतसिंह ठाकुर शिवसिंह से नाराज रहते थे। उन्होंने शिवसिंह को सबक सिखाने एवं किला अपने अधीन करने के लिए अनेक बार चूरू पर आक्रमण किए सन् 1814 में बीकानेर नरेश ने



अमरचंद सुराणा को भारी सैन्य बल के साथ चूरू पर आक्रमण के लिए भेजा। बीकानेर की सेना ने चूरू के किले को चारों तरफ से घेर लिया। दोनों तरफ से तोपें दागी गईं। ऐसे में ठाकुर शिवसिंह के पास गोला-बारूद खत्म हो गया।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि जब गोला-बारूद समाप्त हो गया तो अपनी आजादी की रक्षा के लिए चूरू के इस किले से दुश्मन की सेना पर चांदी के गोले दागे गए। चूरू के लोगों द्वारा दी गई चांदी से गोले बनाए गए थे। विश्व के इतिहास में अपनी आजादी की रक्षा

के लिए चांदी के गोले बनाकर तोपों से दागने की ऐतिहासिक घटना स्वर्णाक्षरों में अंकित की गई। इसी कारण चूरू के किले का नाम अमर हो गया।

आजादी के बाद धीरे-धीरे किले की स्थिति जर्जर हो गई। राज्य सरकार ने इस किले का जीर्णोद्धार करवाकर इसका सौन्दर्यीकरण किया जिससे यह किला पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

—पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

बीएसएफ बटालियन ने हर घर तिरंगा रैली निकाली



पोकरण में बीएसएफ के जवानों ने तिरंगा रैली निकाली।

पोकरण, (निसं) स्वतंत्रता दिवस के 75वें आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत देशभर में चलाए जा रहे घर-घर तिरंगा अभियान के तहत शुक्रवार सुबह सीमा सुरक्षा बल 87 वीं बटालियन की ओर से परमाणु नगरी पोकरण में तिरंगा रैली का भव्य आयोजन किया गया।

सीमा सुरक्षा बटालियन के समदोह रणवीरसिंह ने बताया कि अमृत महोत्सव के अंतर्गत आगामी 13 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा लगाने के अभियान का आगाज किया गया, सीमा सुरक्षा बल के जवानों की ओर से कब्ब में रैली निकालकर जनजागरण किया गया। कार्यक्रम के तहत तिरंगा रैली शहर के रेड फोर्ट से

हरी झण्डी दिखा कर रवाना हुई जो शहर के गांधी चौक, फोर्ट रोड, सुभाष चौक, स्टेशन रोड, नगर पालिका के आगे से होते हुए जयनारायण व्यास सर्किल, अंबेडकर सर्किल से होते हुए गुरुद्वारा तक पहुंची।

इस दौरान बीएसएफ के जवानों की ओर से शहर के राष्ट्रीय स्मारकों पर तिरंगा फहराया गया। सीओ ने अपने उद्बोधन में कहा कि शहर में लोगों को राष्ट्रीय भावना जगाने व राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा वितरित किया गया। इस दौरान बड़ी संख्या में बीएसएफ के वीर जवान इस रैली में शामिल हुए। इस दौरान बीएसएफ के अधिकारी सहित जवानों व स्कूली छात्रों ने ऊंटों और वाहनों पर सवार

जवानों की ओर से आमजनों को आमने-अपने घरों में तिरंगे को लगाने का आह्वान किया गया

होकर तिरंगा रैली में भाग लिया। जवानों की ओर से आमजनों को आमने-अपने घरों में तिरंगे को लगाने का आह्वान किया गया। इस यात्रा को लेकर कमांडेंट रणवीर सिंह ने आमजनों से अपील की कि अपने अपने घरों, मकान, स्कूल सार्वजनिक स्थलों में ज्यादा से ज्यादा झंडे लगाएं।

कीचड़ के बीच होकर विद्यालय तक पहुंचने को मजबूर हैं छात्र



रेवदर के निकट डाक से गोंडाना गोलिया जाने वाले रास्ते पर कीचड़ से लोग को परेशान हैं।

रेवदर, (निसं) रेवदर के निकट अनादरा पंचायत समिति के डाक ग्राम पंचायत मुख्यालय से महज 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित रेबारियों के गोलिया ढाणी के लोगों को बारिश के दिनों में गुजरने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

रेबारियों के गोलिया में निवास करने वाले ग्रामीणों के आने व जाने हेतु एक मात्र यही रास्ता है। जिसका निर्माण नहीं होने से बारिश के दिनों में यह रास्ता दलदल में तब्दील हो जाता है। इतना ही बारिश के दिनों में रास्ते पर जगह-जगह कीचड़ फैल जाता है। गांव के लोगों ने जनप्रतिनिधियों सहित विभागीय अधिकारियों को भी अवगत करवाकर सड़क बनाने हेतु पुरजोर मांग की जा चुकी है लेकिन इस समस्या की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा

है। स्कूल में पहुंचने हेतु आने वाले छात्रों का कहना है की हर वर्ष बारिश के समय में मार्ग पर कीचड़ भरी स्थिति रहती है। जिससे फिसलने लगते हैं। और गिरने की स्थिति रेबारियों के गोलुओ ढाणी में लगभग 15.5 से अधिक घरों की आबादी होने के बावजूद भी प्रशासन की ओर से मदद नहीं है। ग्रामीणों ने बताया कि बारिश का कारण हर वर्ष इसी प्रकार परेशानीयों का सामना करना पड़ता है। सरपंच को कई बार अवगत करवाने के बावजूद भी कोई समाधान नहीं किया जा रहा है। इसको लेकर डाक सरपंच राधा देवी का कहना है की क्षेत्र में पिछले कुछ दिनों से बारिश का दौर लगातार जारी है जिससे ग्रेवल नहीं बना पा रहे हैं। लेकिन बारिश के रुकते ही ग्रेवल करवा दिया जाएगा।

सदा कोर : बहादुरी और मोह का विस्मृत इतिहास

बात 1798 के बाद की है जब अहमद शाह अब्दाली के पौत्र ने सिंधु पार बसे सिखों को पूरी तरह नेस्तनाबूद करने का बीड़ा उठाया और लाहौर को सिखों की भांगी मिस्ल जो कि इसके समय के पंजाब में जत्थों को मिस्ल कहा जाता था जिनमें भांगी, कन्हैया, रामगढ़िया आदि शक्तिशाली मिस्लें हुआ करती थी। कान्हा गांव की कन्हैया मिस्ल के संस्थापक सरदार जयसिंह ने अपनी महत्वाकांक्षा के चलते भांगी और रामगढ़िया मिस्ल के साथ -साथ

सदा कोर चूँकि एक महिला थी इसलिए पुरुष प्रधान समाज में उसे उतनी पहचान नहीं मिली जिसकी वह हकदार थी। अब्दाली के मरते ही सिख आपस में वचस्व की लड़ाई लड़ने लगे। उस समय के पंजाब में जत्थों को मिस्ल कहा जाता था जिनमें भांगी, कन्हैया, रामगढ़िया आदि शक्तिशाली मिस्लें हुआ करती थी। कान्हा गांव की कन्हैया मिस्ल के संस्थापक सरदार जयसिंह ने अपनी महत्वाकांक्षा के चलते भांगी और रामगढ़िया मिस्ल के साथ -साथ



डॉ रामावतार शर्मा

उससे संबंध तोड़ लिए। कड़वे होते जा रहे संबंधों के दौर में महासिंह ने रामगढ़िया मिस्ल के जत्था सिंह और कांगड़ा के राजा संसार चंद से मिल कर अपने ही संरक्षक जयसिंह पर हमला कर उसके एक मात्र पुत्र गुरबक्श सिंह को मार डाला। इस सदमे के कुछ समय बाद जयसिंह भी चल बसे। अब इस बिखरती, कमजोर और नेतृत्वहीन होती कन्हैया मिस्ल की सिरमोह बनी गुरबक्श सिंह की विधवा सदा कोर। हाताशा के इस दौर में सदा कोर ने समझदारी से काम लेते हुए महासिंह के बेटे रणजीत सिंह से अपनी सुंदर और लंबी कद कांठी की बेटे मेहताब कोर से सगाई करवा दी हालांकि बेटे अपने बाप के हत्यारे के बेटे से शादी नहीं करना चाहती थी।

थोड़े समय बाद महासिंह बीमारी से चल बसे पर मृत्यु से पहले अपने युवा बेटे रणजीत सिंह की भांगियों पर विजय को देख लिया। विजय के बाद युवा रणजीत ने दीवान लखपत राय को राजकाज सौंप अपने आप को अस्सी में झोंक दिया जिसके कारण उसकी मां राजकोर दुखी रहने लगी। मौका देख कर सदा कोर ने सगाई को विवाह में बदल दिया और रास्ते से भटकते रणजीत सिंह



मिस्लों के सरदारों ने चुप्पी साध ली तो एक महिला गज्ज के बोली कि ये मर्दों के लिताब हमें दे कर जाना कपड़े पहन लो क्योंकि हम सरदारनियों अफगानों से युद्ध करने जाएंगी। इस पर सारे सरदार रणजीत सिंह के नेतृत्व में अफगानों से युद्ध की तैयारी हुए। हालांकि फुलकियां मिस्ल के साहिब सिंह, कांगड़ा के राजा संसार चंद और कसूर के नवाने ने अफगानों का साथ दिया पर आखिरी जीत सिखों की हुई जिसके बाद युवा रणजीत की धाक पूरे पंजाब में फैल गई। सरबत खालसा में जो औरत गर्जो थी वह युवा रणजीत सिंह की सास और कन्हैया मिस्ल की नेता सदा कोर थी।

कांगड़ा के राजा संसार चंद को अपने अधीन करने के लिए एक नई उपरती सुक्करचक गांव से उठी सुक्करचकिया के सरदार चरत सिंह का साथ लिया। युद्ध में चरत सिंह की मृत्यु होने पर उसके पुत्र महासिंह को सरदार नियुक्त किया गया, जयसिंह इस युवक का शिक्षक और संरक्षक बना। आगे चलकर जन्म के राजा ने अपनी रियासत को भांगियों से मुक्त करवाने के लिए जयसिंह एवम् महासिंह का साथ मांगा। यहां पर महासिंह लालच में आ गया और उसने अकेले ही जन्म पर हमला कर शहर को लूट लिया। इस वादा खिलाफी से नाराज जयसिंह ने

सदा कोर बहादुर, चतुर, राजनीतिक सूझबूझ और वार्तालाप द्वारा विजय पाने में माहिर थी

को अपनी छत्रछाया में ले लिया। कुछ ही समय में दीवान लखपत राय और राजमाता राज कोर की संदिग्ध हालात में मीत हो गई। सदा कोर का युवक रणजीत पर पूर्णाधिकार हो गया पर समय को कुछ और ही मंजूर था क्योंकि मेहताब कोर मां नहीं बन पाई तो रणजीत सिंह ने दूसरी शादी कर ली। इस शादी से जब पुत्र खड्ग सिंह का जन्म हुआ तो निराश सदा कोर अपनी बेटे को लेकर वापस अपनी जागीर बटाला चली गई। सदा कोर के जीवन में फिर उमंग लौटी जब अफगानों ने एक बार फिर पंजाब को तरफ रूख किया। सदा कोर ने रणजीत सिंह के साथ लाहौर की तरफ कूच किया और दोनों ने चालाकी और जन सहयोग से बिना किसी खून खराबे के लाहौर पर कब्जा किया। युवा रणजीत सिंह के विभिन्न विजय अभियानों से कई सिख सरदार खुश नहीं थे। उन्होंने जब मिलकर उस पर हमला किया तो सदा कोर उसके साथ चट्टान की तरह खड़ी रही। उसके निर्देशन में ही रणजीत सिंह ने अमृतसर पर बिना लहू बहाए अधिकार किया। सदा कोर ने बुजुर्ग सिख सरदारों को मना कर रणजीत सिंह को महाराजा घोषित करवाया।

सदा कोर की जान अपनी इकलौती संतान मेहताब कोर में अटक थी जो कि संतानहीन होने से अपना पद और राज शक्ति खो चुकी थी। सदा कोर ने दो नवजात शिशु खरीद कर प्रचारित किया कि ये रणजीत सिंह के बच्चे हैं। चतुर

राजा ने बच्चों को स्वीकार तो कर लिया पर साहिबजादा का दर्जा देकर सबको बता दिया कि वह इनका बाप नहीं है। जब रणजीत सिंह ने एक मुस्लिम नरतकी मोरान से शादी कर ली तो अपमानित मां बेटी ने अंग्रेजों से मिल कर उसे सत्ताच्युत करने का षडयंत्र रचा पर अंग्रेज भी एक

पुरुष राजा पर ज्यादा विश्वास करते थे। सास और दामाद के बीच बड़ी खाई पड़ गई जब राजा ने राजकुमार खड्ग को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इस घोषणा से बचा हुआ रिश्ता भी टूट गया। इतने मन मुटाव के बावजूद जब मालवा के आधिपत्य को लेकर अंग्रेजों और रणजीत सिंह के बीच युद्ध की स्थिति आई तो सदा कोर ने मध्यस्थता कर अमृतसर समझौता करवाया क्योंकि अंग्रेजों को हराना रणजीत सिंह के बस की बात नहीं थी। सदा कोर को चुकी मेहताब कोर की मृत्यु पर रणजीत सिंह नहीं आए तो सदा कोर ने राजा को हटाने के प्रयास फिर से तेज कर दिए वह साठ की उम्र पार कर चुकी थी। रणजीत सिंह ने बटाला अपने अधिकार में लेकर उसकी देखभाल मेहताब के क्रय किए बच्चों को सौंप दी, सदा कोर को नजरबंद कर दिया गया। सदा कोर कब और कैसे मरी इसके बारे में कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। इतिहास हारे हुए पात्रों को याद नहीं रखता है पर लेखक सरबप्रीत सिंह जैसे लोग बीते समय काल में जाते हैं और गुम हुए इतिहास को वापस लाते हैं। सदा कोर बहादुर, चतुर, राजनीतिक सूझबूझ और वार्तालाप द्वारा विजय पाने में माहिर थी पर वह एक मां की बेटी को अपनी बेटी को अपमानित नहीं देखना चाहती थी। यही उसकी शक्ति थी और यही बड़ी कमजोरी।

डॉ रामावतार शर्मा,
चिकित्सक एवं लेखक



राशिफल शनिवार 6 अगस्त, 2022

सावन मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत् 2079, विशाखा नक्षत्र सांय 5:51 तक, शुक्ल योग दिन 12:41 तक, बालव करण दिन 3:04 तक, चन्द्रमा दिन 12:06 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मेघ, बुध-सिंह, गुरु-मीन, शुक्र-मिथुन, शनि-मकर, राहु-मेघ, केतु-तुला राशि में।

विशेष सांय 5:51 से आरम्भ होगा। आज श्री हेरि जयन्ती, अश्वत्थ पुराजा पूजा है। शुक्र कर्क राशि में रविवार प्रातः 5:20 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघडिया: शुभ 7:36 से 9:15 तक, चर 12:33 से 2:11 तक, लाभ-अमृत 2:11 से 5:29 तक।

राहुकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:57, सूर्यास्त 7:08

मेघ	सिंह	धनु
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यह्न परचात अष्टम चंद्र शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है और बने कार्य विफल हो सकते हैं।	मित्रों/परिजनों से चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगे। परिजनों के सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यह्न परचात परिचार कार्यों के कारण मानवीर्य रहेगा और अनावश्यक धन खर्च होगा।	अपने आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यह्न परचात अगमल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।
वृष	कन्या	मकर
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा और विवाह/विधवाओं से राहत मिल सकती है। मन का भय समाप्त होगा। दिन के मध्यह्न परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।	आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यह्न परचात परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।	व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटक हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। दिन के मध्यह्न परचात अगमल कार्यों में प्राप्ति होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा।
मिथुन	तुला	कुंभ
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।	अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी और कार्य योजनासूत्र बने लगे।	नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्य बने लगे। दिन के मध्यह्न परचात व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी और महत्वपूर्ण कार्य योजनासूत्र बने लगे।
कर्क	वृश्चिक	मीन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। दिन के मध्यह्न परचात परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।	घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। खर्च होगा। अनावश्यक समय खराब हो सकता है। दिन के मध्यह्न परचात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी और मन-स्थिति में सुधार होगा।	अपनी कार्य योजना को संशोधित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बने कार्य विफल हो सकते हैं। दिन के मध्यह्न धार्मिक कार्यों में भाग लेना का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थानों का यात्रा संभव है।